इकाई 4 अनुवाद पुनरीक्षण (Vetting of Translation)

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 पुनरीक्षण का अर्थ

4.3 पुनरीक्षण संबंधी विभिन्न संकल्पनाएँ

4.4 पुनरीक्षण के स्तर

4.4.1 भाषायी संशोधन

4.4.2 संकल्पनात्मक संशोधन

4.5 पुनरीक्षणकर्ता कौन

4.6 पुनरीक्षण और मूल्यांकन में अंतर

4.6.1 अनुवाद पुनरीक्षण

4.6.2 अनुवाद मूल्यांकन

4.7 पुनरीक्षण प्रक्रिया के विभिन्न चरण

4.8 पुनरीक्षक के लिए अपेक्षित गुण

4.9 पुनरीक्षण के दस व्यावहारिक सूत्र

4.10 पुनरीक्षण का अभ्यास

4.11 सारांश

4.12 अभ्यास के लिए प्रश्न

4.13 शब्दावली

4.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- बता सकेंगे कि पुनरीक्षण किसे कहते हैं और इसे कौन करता है;
- पुनरीक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- पुनरीक्षण के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा कर सकेंगे; और
- अनूदित सामग्री के पुनरीक्षण का प्रयास कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

इस खंड की पिछली इकाइयों में आपको अनुवाद की प्रक्रिया एवं पद्धति, अनुवाद के प्रकार, अनुवाद की सीमाओं आदि की जानकारी दी गई है। इससे पूर्व आपने अनुवाद के सिद्धांतों, परंपराओं, भाषाविज्ञान तथा अनुवाद के क्षेत्रों तथा भाषा संप्रेषण आदि पर विस्तृत अध्ययन कर लिया है। इस इकाई में आपको अनुवाद पुनरीक्षण के संबंध में जानकारी दी जाएगी। पुनरीक्षण के बारे में भी आपने सुना अथवा पढ़ा अवश्य होगा। यह अनुवाद की संपूर्णता की ओर बढ़ने में एक महत्वपूर्ण चरण है। यहाँ हम जानेंगे कि पुनरीक्षण का क्या अभिप्राय है, इसका कर्ता कौन

तथा किन-किन गुणों से संपन्न होता है और सबसे महत्वपूर्ण यह कि पुनरीक्षण के विभिन्न कौन-कौन से प्रकार तथा स्तर एवं चरण होते हैं। अनुवाद पुनरीक्षण और मूल्यांकन के अलग-अलग होने संबंधी मानकता के आधार भी आप जानेंगे। अनुवाद पुनरीक्षण की सैद्धांतिक जानकारी प्राप्त करने और पाठ के अंत में दिए गए नमूनों का स्वयं व्यावहारिक पुनरीक्षण करने के बाद पुनरीक्षण की प्रक्रिया को अधिक स्पष्टता से जान पाएंगे तथा पुनरीक्षण को अनुवाद प्रक्रिया के साथ बेहतर तरीके से जोड़कर देख सकेंगे।

4.2 पुनरीक्षण का अर्थ

पुनरीक्षण शब्द=पुनः+ईक्षण से निर्मित समस्त पद है जिसका अर्थ है फिर से देखना, किंतु हिंदी में अब इस शब्द का प्रयोग 'अनुवाद के संशोधन' के लिए किया जाता है। अभिप्राय यह है कि कोई व्यक्ति अनुवाद करके अपने अनुवाद को एक बार देख चुका है। दूसरा व्यक्ति अर्थात् पुनरीक्षक (vetter) उसको फिर से देखता है अर्थात् अनुवाद का पुनःईक्षण (देखना) करता है, यही पुनरीक्षण (Vetting) है। अनुवाद एक भाषा में अभिव्यक्त भावों, विचारों, एवं अनूभूतियों का दूसरी भाषा में सन्निकट अभिव्यक्ति के रूप में सजीव प्रस्तुतीकरण है। इस प्रस्तुतीकरण में मूल अर्थ, भाव और संवेदनाओं का अक्षुण्ण रहना और लक्ष्यभाषा में उसकी पुनरभिव्यक्ति होना ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। पुनरीक्षण की आवश्यकता (इसलिए भी है कि) पुनरीक्षण अनुवाद प्रक्रिया का व्यावहारिक दृष्टि से अगला एवं अंतिम चरण है अर्थात् अनुवाद कार्य के तीनों चरण-विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन (नाइडा द्वारा प्रस्तावित) संपन्न हो जाने के बाद उसे परिशुद्ध करने का काम अपेक्षित होता है, इसीलिए अनुवाद कार्य का संशोधन करने के लिए पुनरीक्षण किया जाता है। पुनरीक्षण करते समय मूल रूप से यह देखा जाता है कि स्रोतभाषा के पाठ के कथ्य और शैली की अनुवाद में रक्षा हुई है अथवा नहीं। इस दृष्टि से पुनरीक्षण कार्य अत्यंत श्रमसाध्य कार्य है जो कई बार तो अनुवाद से भी अधिक गंभीर बन जाता है। पुनरीक्षण तथा समीक्षा काफी समानार्थी होने से कई बार भ्रम उत्पन्न कर देते हैं तथापि अनुवाद के संदर्भ में पुनरीक्षण (Vetting) महत्वपूर्ण पारिभाषिक अभिव्यक्ति है क्योंकि प्रकार्यात्मक अथवा पारिभाषिक शब्दावली के उपयोग वाले अनुवाद क्षेत्रों, यथा-वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रषासनिक, विधिक एवं अन्य सूचना प्रधान साहित्य आदि में पुनरीक्षण की स्पष्ट गुंजाइश रहती है, जबकि समीक्षा स्वप्रेरणा और 'स्वान्त सुखाय' भावना से उत्पन्न सर्जनात्मक साहित्य के प्रकाशित होने के बाद उसकी गुणदोष परीक्षा की गतिविधि है।

4.3 पुनरीक्षण संबंधी विभिन्न संकल्पनाएँ

प्रायः ऐसा माना जाता है कि अनुवादक और पुनरीक्षक एक ही व्यक्ति न होकर और एक-सी सृजनात्मक प्रतिभा और भाषिक क्षमता के व्यक्ति न होकर एक-दूसरे के पूरक होने चाहिए। इस संबंध में मुख्य रूप से तीन बातें कही जा सकती हैं :

1. अनूदित पाठ की भाषा मानक होनी चाहिए। यदि किसी ब्रजभाषी अथवा अवधी भाषी ने हिंदी में कोई अनुवाद किया है तो पुनरीक्षक खड़ी/बोली भाषी होना चाहिए, क्योंकि अपनी बोली के दबाव से अनुवाद में कहीं-कहीं ऐसे क्षेत्रीय अथवा अमानकता की ऐसी गंध आ जाने की संभावना हो सकती है, जिनकी ओर ब्रजभाषी अथवा अवधी भाषी की तुलना में ब्रजेतर बोली भाषी का ध्यान जाना अधिक स्वाभाविक है। अर्थात् सम-बोली-भाषी पुनरीक्षक की तुलना में अन्य बोली-भाषी की दृष्टि के ऐसे प्रयोगों पर जाने की संभावना अधिक होती है। भाषाओं के भी संबंध में यही बात है। यदि किसी बांग्ला-भाषी ने अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद किया हो तो उसका पुनरीक्षक बांग्ला-भाषी न होकर कोई अन्य भाषा-भाषी हो। निष्कर्षतः पुनरीक्षक यदि अनुवादक की बोली या भाषा बोलने वाला न होकर किसी अन्य बोली या भाषा का भाषी हो तो अपना काम अधिक वस्तुनिष्ठता से कर सकेगा।
2. ज्ञान प्रधान साहित्य का अनुवाद सहयोग से हो तभी अधिक अच्छा होता है। यदि अनुवादक विषय विशेष का विशेषज्ञ है तो पुनरीक्षक भाषा विशेषज्ञ होना चाहिए। उसे सभी विषयों का आवश्यक ज्ञान होना चाहिए। अर्थात् अनुवादक की विषय में अच्छी गति हो और पुनरीक्षक की विषय में गति के साथ-साथ,

स्रोत और लक्ष्यभाषा में भी अच्छी गति हो। इस तरह ज्ञान की दृष्टि से अनुवादक और पुनरीक्षक को एक-दूसरे का पूरक होना चाहिए। दोनों ही भाषाओं के मात्र जानकार होने पर तो काम नहीं चलेगा या मात्र विषय के जानकार हों तब भी अनुवाद अच्छे स्तर का नहीं हो सकेगा।

3. सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में अनुवादक और पुनरीक्षक का एक जैसा न होना अपेक्षित है। एक स्वयं साहित्य का सर्जक हो और दूसरा साहित्य-सर्जक न होकर अच्छा अनुवादक हो तो दोनों एक दूसरे को परस्पर सहयोग कर लेते हैं। जो व्यक्ति सर्जक है, वह अपनी प्रतिभा के दबाव में अधिक छूट लेने की गलती प्रायः कर बैठता है, जिस पर असर्जक किंतु अच्छा अनुवादक अंकुश लगा सकता है। इस प्रकार जिस अनुवादक में सृजन प्रतिभा नहीं है, वह सृजनात्मक साहित्य का अच्छा सृजनात्मक अनुवाद नहीं कर सकता। आदर्श स्थिति यही होती है कि कोई सृजन प्रतिभा का धनी अनुवाद करे तथा कोई असर्जक किंतु अच्छा अनुवादक उसका पुनरीक्षण करे। वस्तुतः अनुवाद में ऐसी व्यवस्था अधिक व्यावहारिक प्रतीत होती है।

4.4 पुनरीक्षण के स्तर

अनुवाद में संबद्ध विषय और भाषिक अभिव्यक्ति दोनों का समान महत्व है। अतः अनुवाद का पुनरीक्षण विषय और अभिव्यक्ति दोनों ही दृष्टियों से किया जाना चाहिए। अपेक्षित होने पर दो पुनरीक्षक भी अच्छे रहते हैं-एक विषय का जानकार और एक भाषा का जानकार। ऐसी स्थिति में अनूदित पाठ विषय और अभिव्यक्ति दोनों ही दृष्टियों से उत्कृष्ट कोटि का बन जाता है। पुनरीक्षण करते समय किए जाने वाले संशोधन को दो भागों में बाँटा जा सकता है :

1. भाषायी संशोधन (Lingual Intervention)
2. संकल्पनात्मक संशोधन (Conceptual Intervention)

यदि इन दोनों प्रकार के संशोधन करने की जरूरत न हो तो मोटे तौर पर पुनरीक्षक को चाहिए कि वह अनुवाद के साथ छेड़छाड़ न करें और अनुवादक को पूरी स्वतंत्रता दें कि वह मुख्य रूप से भाषायी और संकल्पनात्मक अभिव्यक्ति दे सके। तथापि, इन दोनों पर आगे अलग से भी विचार करना समीचीन होगा-

4.4.1 भाषायी संशोधन (Lingual Intervention)

वस्तुतः अनुवाद में भाषायी संशोधन की आवश्यकता अधिक नहीं पड़नी चाहिए क्योंकि अनुवादक का शैक्षिक स्तर प्रायः इतना उच्चस्तरीय होना अपेक्षित है कि इस प्रकार के संशोधनों की अधिक गुंजाइश ही न बचे। परंतु विचार की गति इतनी तीव्र होती है कि उन्हें अभिव्यक्त करते समय लेखनी उनका अनुसरण नहीं कर पाती। अतः भाषायी त्रुटियाँ या चूक हो जाने की संभावना बनी रहती है। उल्लेखनीय है कि यद्यपि भाषायी संशोधन सतही होते हैं लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि भाषा ही विचारों की वाहिनी है और यदि विचारों की वाहिनी के रूप में प्रयुक्त भाषा में शब्दों का सही चयन, सही शब्द छाया का प्रयोग, वाक्य-विन्यास का सही क्रम और सुगठित वाक्य-प्रयोग पुनरीक्षक द्वारा किया जाता है तो निश्चय ही विचार सही तौर पर व्यक्त हो पाएगा और संप्रेषण भी 'पूर्णता' (Perfection) के निकट होगा। वस्तुतः भाषायी संशोधन करते समय पुनरीक्षक वही काम कर रहा होता है जो कार्य आधुनिक सभ्यता में ब्यूटीशियन करते हैं। उनका कार्य दोषों का परिहार, त्रुटियों को छुपाना या आवृत्त करना तथा सुदंर सुगठित रूप प्रस्तुत करना है। यही कार्य भाषायी संशोधन करते समय पुनरीक्षक कर रहा होता है। अतः भाषायी संशोधन गौण होते हुए भी अत्यंत महत्वपूर्ण और आवश्यक होते हैं।

स्मरण रहे कि अनुवाद और पुनरीक्षण के क्षेत्र में शब्दों का चयन और प्रयोग पांडित्य-प्रदर्शन के लिए कदापि नहीं होना चाहिए। कभी-कभी पुनरीक्षक अनुवादकों द्वारा प्रयुक्त शब्दावली में मात्र पांडित्य-प्रदर्शन के लिए संशोधन कर देते हैं। इस प्रवृत्ति से बचना पुनरीक्षक के लिए बेहद जरूरी है। देखा गया है कि 'आवश्यक' को काट कर 'जरूरी' और 'जरूरी' को काटकर 'आवश्यक', 'अंततः' को काटकर 'अंत में' या 'अंततोगत्वा' कर दिया गया है। अनुवाद के प्रति सहानुभूतिपूर्ण और तटस्थ रहना पुनरीक्षक का पहला कर्त्तव्य है अन्यथा वह अनुवाद और अनुवादक दोनों के प्रति न्याय नहीं कर पाएगा।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि भाषा का स्वरूप निरंतर बदलता और निखरता रहता है क्योंकि भाषा स्वयं एक अनवरत प्रवाह है। अतः पुराने पड़ गए शब्द जैसे 'एतदर्थ', इसके निमित, 'हेतु' जैसे शब्द आज के संदर्भ में और अनुवाद के क्षेत्र में प्रयोग करने से एक ओर भाषा बोझिल हो जाती है, दूसरी ओर आधुनिक भाषा-प्रवाह तथा आम शिक्षित वर्ग से भी दूर होकर कृत्रिम-सी लगने लगती है। ऐसा करके हम उसे 'पुरातन' रूप में पुरातन परिधान को ही प्रस्तुत कर रहे होंगे जो आज के लेखक, पाठक, श्रोता और उपभोक्ता को कदाचित ग्राह्य नहीं है। हाँ, यदि प्रवाह में ऐसे शब्द स्वतः आ जाएँ तो अनुचित नहीं है। स्मरण रहे कि अनुवाद और पुनरीक्षण दोनों ही उच्च कोटि की मानसिक प्रक्रियाएँ है जिनमें अनुवादक समय-सीमा में बँधकर अपनी क्षमता को साकार कर रहा होता है। अतः अनुवादक के प्रति सौहार्द और अनुवाद के प्रति तटस्थता रखना पुनरीक्षक के लिए परम आवश्यक है।

यहाँ भाषायी संशोधनों के संबंध में जिन बातों का उल्लेख किया गया है उनके परिप्रेक्ष्य में सुविधा की दृष्टि से पुनरीक्षण कार्य के निम्नलिखित संक्षिप्त नियम निर्धारित किए जा सकते हैं :

1. व्याकरण-सम्मत शब्द प्रयोग और वाक्य-विन्यास सुनिश्चित करना।
2. वाक्य-विन्यास में वाक्य सौष्ठव, उपवाक्य-वाक्यांशों का क्रम बैठाना।
3. अवतरण संरचना और समग्र अध्याय और अध्यायों का उपयुक्त अनुक्रमण।
4. क्लिष्ट शब्द प्रयोग का परिहार और अन्य सहभाषाओं के प्रचलित शब्दों का प्रयोग जिससे वाक्य बोझिल और अनुवाद दुर्बोध ओर दुर्गम न होने पाए।
5. सहजता और स्पष्टता (Smoothness and Lucidity)।
6. भाषा-सौष्ठव एवं सज्जा।
7. विषय के साथ भाषा का अनुकूलन, विषय-सम्मत शब्द प्रयोग और चयन जो भाव-प्रवणता और विचार-प्रवाह दे सके।
8. सुनिश्चित करना कि कोई स्थल छूट न गया हो।

4.4.2 संकल्पनात्मक संशोधन (Conceptual Intervention)

किसी अनूदित सामग्री में संकल्पनात्मक संशोधन करने से पहले पुनरीक्षक के लिए स्वयं इस बात से आश्वस्त हो जाना नितांत आवश्यक है कि जो अवधारणा या संकल्पना मूलपाठ की उसने ग्रहण की है, वह निःसंदेह सही है और स्वयं पुनरीक्षक को उस विषयवस्तु, अभिव्यक्ति या संकल्पना के विषय में कोई भ्रम या भ्रांति नहीं रह गई है। उसके द्वारा प्रतिपादित संकल्पना मूल लेखक की अभिव्यक्ति और अवधारणा के अनुरूप ही है और समष्टि रूप में उस संकल्पना के विषय में उसे ऊहापोह नहीं है।

प्रायः तकनीकी सामग्री के अनुवाद में लगभग एक जैसी अभिव्यक्तियाँ तथा शब्द-छायाएँ साथ-साथ गुंथी रहती हैं जिनमें महीन संकल्पनात्मक और तकनीकी अंतर होता है। सभी आंगिक और सर्वांगीण संकल्पनाओं का निरंतर निर्वाह और प्रतिपादन करते रहना पुनरीक्षक का कार्य है। अत्यंत जागरुक, सिद्धहस्त, अनुवादक और उतने ही कुशाग्रबुद्धि, सक्षम पुनरीक्षक ही इस श्रेष्ठ कोटि के अनुवाद और पुनरीक्षण को संपन्न कर सकते हैं।

प्रत्येक अनुवाद का एक निश्चित प्रयोजन होता है। यह प्रयोजन मनोरंजक, साहित्यिक या कथात्मक से लेकर विधि, अनुसंधान या विज्ञान या अन्य तकनीकों से भी संबंधित हो सकता है। अतः तत्संबंधी संशोधन करना पुनरीक्षक का प्रमुख कार्य है। उसे यह सुनिश्चित करना होता है कि अनुवादक मूलार्थ या विचार अथवा संकल्पना को अनुवाद में सही-सही और पूर्ण (Perfect) तथा दक्षतापूर्वक कह पाया है या नहीं। यदि अनुवादक इस कार्य को पूरी क्षमता और दक्षता से कर पाया हो तो शब्द-चयन और शब्दों का प्रयोग स्वतः गौण हो जाता है और पुनरीक्षक के लिए अधिक कुछ करने की गुंजाइश नहीं रहती।

पुनरीक्षक को इस क्षेत्र में अत्यधिक सावधानी बरतनी होगी। वस्तुतः मूल संकल्पना का संप्रेषण ही पुनरीक्षण का मुख्य दायित्व है। इस दायित्व को तीव्रतापूर्वक अनुवाद कर रहे अनुवादक पर पूरी तरह नहीं छोड़ा जा सकता है।

यह नितांत जरूरी है कि पुनरीक्षण के स्तर पर मूल संकल्पना गलत संप्रेषित न हो जाए। यह सुनिश्चित करना उसका दायित्व है कि अनुवादक द्वारा की गई अभिव्यक्ति मूल के अनुरूप है या नहीं। यदि ऐसा न हो तो उसे भाषायी और संकल्पनात्मक दोनों प्रकार के संशोधन करने होंगे जो निश्चय ही श्रमसाध्य कार्य है। इस स्थिति में पुनरीक्षक को अनुवादक के स्तर तक उतर कर गहरी पैठ लगानी होगी जिसमें शब्दकोशों से सहायता से लेकर परामर्श या विचार-विमर्श की भी आवश्यकता हो सकती है। ऐसी स्थिति में पुनरीक्षक को अपने आपको अनुवादक की भूमिका में लाना पड़ सकता है, तभी वह मूल के साथ न्याय कर सकता है। संकल्पनात्मक संशोधनों को नीचे लिखे क्रम के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है :

1. अस्पष्ट और संदिग्ध संकल्पना (Hazy and doubtful concept)
2. आंशिक संकल्पना (Part concept)
3. सर्वांगी या संपूर्ण संकल्पना (Whole concept)
4. मूल संकल्पना (Basic concept)
5. निश्चित और असंदिग्ध संकल्पना (Concept beyond doubt)

पुनरीक्षक के लिए पुनरीक्षण करते समय यह देखना आवश्यक है कि लेखक का आशय क्या है अर्थात् लेखक कहना क्या चाहता है? उसका अभिप्राय क्या है? इसका ध्यान पुनरीक्षक द्वारा रखा जाना जरूरी है। लेखक का अभिप्राय या संकल्पना क्या है उसे ऊपर वर्णित तीन भागों में विभक्त करके विश्लेषित किया गया है।

1. वस्तुतः अनुभवी, जागरुक और सिद्धहस्त अनुवादक भी तब तक अनुवाद प्रारंभ ही नहीं करता जब तक कि मूलपाठ या संकल्पना पूर्णतः स्पष्ट न हो। श्रेष्ठ अनुवाद संपन्न करने के विषय में चीनी विद्वान, एच.लीज. फैंग ने यहाँ ने यहाँ तक कहा है कि ''जब तक अनुवादक मूल के प्रत्येक शब्द को स्पष्ट करने की स्थिति में न हो तब तक अनुवाद करना मूर्खता ही होगी।'' (It would be nothing short of foolishness unless the translator is able to explain every word of it (text).) फिर भी समयाभाव के कारण या वक्त की जरूरत के अनुसार और खासतौर से सरकारी तंत्र में अक्सर कई प्रकार के दबाव और सीमा के रहते हुए तीव्रता से अनुवाद कर डालना अनुवादकों की विवशता होती है। यही कारण है कि अनुवाद सही या पूर्ण संकल्पना ग्रहण नहीं कर पाता अथवा आंगिक पूर्णता ग्रहण कर पाता है या फिर संकल्पना अस्पष्ट ही रह जाती है। अतः पुनरीक्षक अनुवादक की इन विशेषताओं एवं सीमाओं को ध्यान में रखते हुए संकल्पनात्मक अस्पष्टता से बचे और पूरी, सही और सर्वांगीण संकल्पना पर ध्यान दे। इसके लिए पुनरीक्षक के पास अपेक्षाकृत यथेष्ट समय होता है, क्योंकि उस पर व्यक्तिशः लेखन और भाषायी अभिव्यक्ति का परिमाणात्मक भार कम ही होता है। व्यक्तिशः लेखन का कार्य प्रायः अनुवादक कर चुका होता है। अतः संकल्पना की स्पष्टता सुनिश्चित करना पुनरीक्षक का मूल दायित्व है।
2. सर्वांगी या मूल अवधारणा को समझने के लिए आवश्यक है कि पुनरीक्षक संपूर्ण सामग्री का आंगिक और सर्वांगीण अध्ययन करे। आंगिक या आंशिक संकल्पना ग्रहण करने का प्रत्येक अवतरण और अध्याय का निकट से अध्ययन करना आवश्यक है। इस प्रक्रिया के दौरान यदि कोई संदिग्ध स्थल रह जाए तो उसका स्पष्टीकरण और परामर्श विशेषज्ञ से संपर्क और विचार-विमर्श करके हो सकता है।
3. मूलपाठ के अध्ययन की इस प्रक्रिया के दौरान तकनीकी शब्दावली के साथ पुनरीक्षक का साक्षात्कार स्वयं हो जाएगा और पुनरीक्षक अभिव्यक्ति की स्थिति में हो जाएगा।
4. अध्ययन और संशोधन करने की इस मानसिक स्थिति तक आते-आते पुनरीक्षक मूल सामग्री तथा अनुवाद सामग्री से इतना निकट से सुपरिचित होकर अपेक्षित संशोधन कर पाएगा। इसके अतिरिक्त वह न केवल सहज हो पाएगा वरन् किए हुए संशोधनों के विषय में भी पूर्णतया आश्वस्त भी हो सकेगा। निःसंदेह इस प्रकार के पुनरीक्षण से पुनरीक्षक को आत्मसंतोष तो प्राप्त होगा ही, वह लगभग पूर्णतः (Perfection) का प्रतिपादन भी कर सकेगा।

4.5 पुनरीक्षणकर्ता कौन

पुनरीक्षण की संक्षिप्त परिभाषा पर चर्चा के बाद आपने अनुभव किया होगा कि यह कार्य अलग-अलग स्तरों पर अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। यह पुनरीक्षण दो स्तरों पर होता है। एक तो स्वयं अनुवादक द्वारा किए गए अनुवाद का संशोधन, संवर्धन एवं परिवर्तन हेतु स्वयं देखना। दूसरे, किसी अन्य अन्य योग्य एवं अनुकूल व्यक्ति से उसका पुनरीक्षण एवं संशोधन करवाना। मनुष्य अपनी गलती स्वयं पकड़ ही ले, यह आवश्यक नहीं होता। कभी-कभी तटस्थता एवं ईमानदारी भी नहीं रह पाती। अतः 'निंदक नियरे राखिए' के आधार पर अनुवादक को पुनरीक्षक की शरण लेनी होती है और यदि दूसरा व्यक्ति अनूदित पाठ का परीक्षण करता है तो वह एक पाठक भी भूमिका भी निभाता है जो महत्वपूर्ण है।

4.6 पुनरीक्षण और मूल्यांकन में अंतर

पुनरीक्षण और मूल्यांकन में एक-सी प्रक्रिया होने के कारण कई बार इन्हें अलग रखना असंभावित सा लगता है। अतः आइए इस विषय पर गहराई से विचार करें।

4.6.1 अनुवाद पुनरीक्षण

अनूदित संस्करण की भाषा, उसकी परिनिष्ठता के साथ-साथ संप्रेष्य बनाने का कार्य, पुनरीक्षण के दौरान ही संभव हो सकता है। अनुवाद की गई सामग्री को विषय-वस्तु, भाषा आदि की दृष्टि से दोबारा जाँचना ही पुनरीक्षण है। अनुवाद करते हुए गलतियों का होना स्वाभाविक है, इसलिए पुनरीक्षण की आवश्यकता पड़ती है। इस कार्य को पहले स्वयं अनुवादक और बाद में वस्तुनिष्ठता की दृष्टि से सामान्यतः भिन्न अनुवादक द्वारा किया जाता है। पुनरीक्षक अनुवादक की तुलना में अधिक अनुभवी एवं वरिष्ठ होता है। स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा की गहन जानकारी होने के साथ-साथ गंभीर विवेक, आत्म-विश्वास और तटस्थता का भाव होता है। अपने इन गुणों-क्षमताओं के आधार पर पुनरीक्षक अनूदित सामग्री को जाँचकर, सुधारकर और सजा-सँवाकर अधिक सुगढ़ बनाता है।

4.6.2 अनुवाद मूल्यांकन

अनुवाद की जाँच के परिप्रेक्ष्य में प्रयुक्त होने वाला एक अन्य शब्द है-अनुवाद मूल्यांकन। हालाँकि अनुवादक पुनरीक्षरण और अनुवाद मूल्यांकन, दोनों ही अनुवाद-कार्य संपन्न हो जाने के बाद की प्रक्रियाएँ हैं और इनका मूलभूत कार्य 'अनुवाद की जाँच' करना है। किंतु दोनों अवधारणाओं में अंतर के तंतु परिव्याप्त हैं। जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है, अनुवाद पुनरीक्षण के अंतर्गत अनूदित सामग्री की जाँच के साथ-साथ उसमें कथ्य, भाषा, शैली और लक्ष्यभाषा की संस्कृति की दृष्टि से जाँच करते हुए अपेक्षित सुधार-संशोधन एवं फॉर्मेट संपादन का कार्य किया जाता है, वहाँ अनुवाद-मूल्यांकन द्वारा अनुवाद में व्याप्त दोषों का मूल खोजने का प्रयत्न किया जाता है। वास्तव में अनुवाद मूल्यांकन, अनूदित साहित्य को गुणात्मक दृष्टि से जाँचने-परखने और इस जाँच-परख के लिए विशिष्ट प्रतिमान अथवा कुछ निश्चित मानदंडों की कसौटी पर कसना है ताकि अनूदित रचना के विभिन्न दोषों के कारणों को उद्घाटित कर उसकी गुणवत्ता के विषय में निर्णय दिया जा सके। इस दृष्टि से अनूदित सामग्री की जाँच के पश्चात् अनुवाद के स्वरूप और गुणवत्ता पर टिप्पणी की जाती है। इस निर्णय-स्थापना का उद्देश्य यह होता है कि अनूदित रचना को 'श्रेष्ठ अनुवाद' की श्रेणी में समुचित स्थान दिलाया जा सके। अनुवाद पुनरीक्षण अनुवाद-प्रक्रिया का एक सोपान (अंतिम सोपान) है, जबकि अनुवाद मूल्यांकन, अनुवाद प्रक्रिया के पूर्ण होने के पश्चात् का विवेचन है। इस दृष्टि से अनुवाद पुनरीक्षण अनुवाद से अलग विधा नहीं हैं, जबकि अनुवाद मूल्यांकन का स्वतंत्र अस्तित्व है। इस पर हम अगली इकाई में विस्तार से चर्चा करेंगे। पुनरीक्षक के लिए स्वाभाव से अनुवादक होना अनिवार्य है जबकि अनुवाद मूल्यांकन के लिए अनुवाद का अनुभव होना अनिवार्य नहीं है।

4.7 पुनरीक्षण प्रक्रिया के विभिन्न चरण

इस प्रकार हम देखते हैं कि पुनरीक्षण की इस भाषायी और संकल्पनात्मक संशोधन की प्रक्रिया में अनेक चरण अथवा सोपान क्रमागत रूप से संपन्न होते हैं, जिनमें पुनरीक्षक एक पाठक के रूप में मूलपाठ को अनूदित पाठ के साथ मिलाकर पढ़ता है तथा यह देखता है कि मूलपाठ छूटा तो नहीं है, यदि है तो उसका क्या कारण हो सकता है; या फिर उसकी आवश्यकता है अथवा नहीं, और क्या उस पाठ को फिर से अनूदित कराया जाना चाहिए अथवा उसका भाव दे दिया गया है। यह मूलपाठ तथा अनूदित पाठ का आपस में मिलान करने पर आशय की पूर्णाभिव्यक्ति को भी इस प्रक्रिया में परखता है। इस प्रकार मिलान के उपरांत यदि कोई अशुद्धि या कमियाँ दिखाई देती हैं तो पुनरीक्षक उन्हें पुरा करके का यत्न भी करता है। यह अशुद्धि संदर्भ अथवा कथ्यागत अपर्याप्तता के कारण अनुवादक से होनी संभव है। Reservation का अर्थ आरक्षण अथवा संदेह, आशंका तथा असहमति आदि संदर्भगत अर्थ हो सकते हैं।

भाषायी संषोधन करते समय पुनरीक्षण लक्ष्यभाषा में अनूदित पाठ में आई भाषागत एवं शैलीगत अशुद्धियों को भी सुधारने का यत्न करता है। वह लक्ष्यभाषा की भाषागत व शैलीगत प्रकृति को ध्यान में रखकर किए गए अनुवाद को भी देखता है और महत्वपूर्ण चरण लक्ष्यभाषा की सांस्कृतिक सामाजिक स्वीकार्यता में अनूदित पाठ को देखना होता है।

पुनरीक्षक अनूदित पाठ में मूलपाठ के प्रारूप को भी बनाए रखने की जाँच करता है। अंकीय अथवा वर्ण प्रणाली के प्रारूप तथा अनुक्रमांकादि में अनावश्यक परिवर्तन से विभ्रम पैदा हो सकता है; अतः पुनरीक्षण को यहाँ सावधानी बरतनी पड़ती है। जैसे अक्सर अंग्रेजी के a, b, c, d, e आदि के लिए हिन्दी में अ, आ, आदि के स्थान पर क, ख, ग सहज एवं सुबोध रहते हैं, जबकि 1, 2, 3, 4 के लिए 1, 2, 3, 4 या I, II, III, IV आदि रोमन अंक के लिए उसी मूल फार्मेट को अपनाया जाना अधिक संप्रेष्य होगा।

4.8 पुनरीक्षक के लिए अपेक्षित गुण

अभी तक हमने पुनरीक्षण की पद्धति, आयामों तथा आधारों पर चर्चा के अनुक्रम में यह अनुभव किया कि पुनरीक्षक में निम्नलिखित गुणों का होना अपेक्षित है :

1. पुनरीक्षक को सजग एवं सचेत होना चाहिए। गिद्ध दृष्टि (अर्थात् Eagle eye) रखनी चाहिए।
2. उसे अनूदित सामग्री के विषय का सम्यक् ज्ञान होना चाहिए।
3. एक ही परिवार की सह-भाषाओं के शब्दों और प्रयोगों की सामान्य जानकारी होनी चाहिए।
4. पुनरीक्षक में भाषा-विश्लेषण की क्षमता होनी आवश्यक है।
5. उसे व्यापक/सामान्य ज्ञान से युक्त होना चाहिए। ज्ञान की दृष्टि से पुनरीक्षक को अनुवादक का पूरक होना चाहिए क्योंकि अनुवादक यदि हृदय (भाव पक्ष) है तो पुनरीक्षक को मस्तिष्क (विचार पक्ष) होना चाहिए।
6. पुनरीक्षक को बहुपठित (well-read) और बहुज्ञ होना चाहिए।
7. पुनरीक्षक में सृजनात्मक क्षमता होनी चाहिए।
8. उसे अद्यतन सामाजिक स्थिति और परिवर्तनों के प्रति जागरुक होना चाहिए।
9. पुनरीक्षक को संशोधक और संपादक (Editor) की भूमिका निभाने वाला होना चाहिए अर्थात् उसमें अनुवाद में तारतम्यता और अंतःसंबंध बनाए रखने की क्षमता होनी चाहिए।
10. पुनरीक्षक में सहज बुद्धि, विवेकपूर्ण और मानवीय दृष्टिकोण होना चाहिए।
11. उसे जन-जीवन को प्रभावित करने वाले यांत्रिक परिवर्तनों, वैज्ञानिक खोज और औद्योगिक विकास से सामान्यतः परिचित होना चाहिए।

12. उसमें तटस्थता और निर्णय (Impartility and determination) लेने की क्षमता होनी चाहिए ।
13. उसमें धैर्यशीलता और समर्पित भाव से काम करने की क्षमता भी होनी चाहिए।
14. विषयवस्तु और उसके प्रकार के आधार पर अर्थात् पत्रकारिता, कार्यालयी, विधि आदि विषयों के आधार पर पुनरीक्षण की प्रक्रिया तय करनी चाहिए।
15. अनुवाद में अनुवादक की शैली तथा उसकी पहचान की गंध नहीं आनी चाहिए।
16. पुनरीक्षक को सीमाशुल्क अधिकारी (Custom officer) की भूमिका निभानी चाहिए अर्थात् प्रत्येक वस्तु-अनुवाद के अंग-प्रत्यंग की निष्ठापूर्वक जाँच करें।
17. पुनरीक्षक को पुनरीक्षण एवं संशोधन करने के बाद अनूदित सामग्री का नीर-क्षीर विवेक भाव से तटस्थ मूल्यांकन करना चाहिए। वह एक प्रकार से तीसरी आँख होता है।

4.9 पुनरीक्षण के दस व्यावहारिक सूत्र

पुनरीक्षक के लिए अनिवार्य गुणों के बारे में हालाँकि विस्तार से काफी चर्चा की जा चुकी है परंतु उपयुक्त सभी दायित्वों को निभाने के लिए पुनरीक्षक के लिए अपेक्षित गुणों को निम्नलिखित दस व्यावहारिक सूत्रों में सूत्रबद्ध किया जा सकता हैः

1. पुनरीक्षण प्रारंभ करने से पूर्व मूलपाठ को भलीभाँति पढ़ना चाहिए तभी वास्तविक भाव ग्रहण करना संभव हो पाएगा और मूल का उद्देश्य एवं संकल्पना स्पष्ट होगी।
2. अनूदित सामग्री को मूलपाठ के परिप्रेक्ष्य में पढ़ना और समक्षना चाहिए और साम्य एवं वैषम्य के आधार पर उसका मूल्यांकन करना चाहिए।
3. मूलभूत विचार/भाव/उद्देश्य/संप्रेष्य क्या है, उसे रेखांकित कर लेना चाहिए।
4. अनुवाद किस पाठक वर्ग के लिए किया गया है, इस बात को केंद्र में रखना चाहिए क्योंकि पाठक वर्ग के अनुसार भाषा का स्वरूप भी बदलता है।
5. शब्दों और वाक्याशों के अभिधात्मक अर्थ के साथ-साथ लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ को भी ध्यान में रखना चाहिए। साथ ही शब्दों की अनेकार्थता और बहु-अर्थता के प्रति पूरी तरह सजग एवं सचेत रहना चाहिए।
6. अनूदित सामग्री संपूर्ण और सही अर्थ व्यक्त कर पा रही है अथवा नहीं, इस संदर्भ में आश्वस्त होना चाहिए और समग्रता में उसका क्या प्रभाव परिलक्षित हो रहा है, इसे ध्यान में रखकर सामग्री का जाँच-पड़ताल करनी चाहिए।
7. अनूदित सामग्री के पाठक मूल भाषा को नहीं जानते। अतः उनके प्रति कोई अन्याय न हो सके, इसके लिए विषयवस्तु और भाषाशैली की दृष्टि से अनूदित पाठ की जाँच करनी चाहिए।
8. मूल भाषा के वाक्य-विन्यास की छाया अनूदित भाषा के वाक्य-विन्यास से आच्छादित नहीं होनी चाहिए।
9. यदि अनुवादक किसी संदर्भ या घटना को व्याख्यायित नहीं कर सका हो तो पुनरीक्षक को अपेक्षानुसार पाद-टिप्पणी में उसकी व्याख्या भी करनी चाहिए।
10. अनुवाद में अनुवादक की शैली की झलक तो आ सकती है परंतु पुनरीक्षक को अपनी शैली लाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। भूमिका तटस्थ संशोधक की उसकी होना ही श्रेयस्कर है क्योंकि इस 'पाठ' का सृजक केवल अनुवादक ही है।

4.10 पुनरीक्षण का अभ्यास

उपर्युक्त अपेक्षाओं के अनुपालन की दृष्टि से अनूदित पाठ में पुनरीक्षण के स्तर पर किए जाने वाले संशोधन निम्नलिखित उदाहरणों में द्रष्टव्य हैं। सर्वप्रथम पदबंध/वाक्यांश स्तर पर कुछ उदाहरण दिए गए हैं। जब आप

अधो-रेखांकित पदों को ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे तो आपको स्पष्ट हो जाएगा कि पुनरीक्षण क्यों आवश्यक है और इसका क्या महत्व है।

क्र.सं.	मूल	अनुवाद	पुनरीक्षित अनुवाद
1	Court attachment Orders	न्यायालय का कुर्की संबंधी आदेश	न्यायालय द्वारा जारी कुर्की आदेश
2	Processing of indents & monitoring of supplies	माँग-पत्र एवं मॉनीटरन आपूर्ति संबंधी प्रक्रिया।	माँग-पत्र संबंधी प्रक्रिया और पूर्ति की मॉनीटरिंग
3	Centre of Advance Studies	प्रगति अध्ययन केंद्र	उच्च अध्ययन केंद्र
4	Ground realities	भूमि की वास्तविकता	ठोस वास्तविकता/ वस्तु-स्थिति
5	Resource person	संसाधन विशेषज्ञ	ज्ञान-साधन विशेषज्ञ

नीचे कुछ वाक्यों के अनुवाद और पुनरीक्षित अनुवाद नमूने के तौर पर दिए गए हैं। अब आप को अुनवाद और पुनरीक्षित अनुवाद में तुलना करके देखना होगा कि अनुवाद के स्तर पर क्या और किस प्रकार की गलतियाँ हुई हैं और पुनरीक्षण करते समय उनमें क्या और किस प्रकार के संशोधन किए गए हैं।

1	**मूलपाठ**	Juvenile justice is the area of criminal law applicable to persons not old enough to be held responsible for criminal acts.
	किया गया अनुवाद	किशोर न्याय आपराधिक विधि का ऐसा क्षेत्र है जो उन व्यक्तियों पर लागू होता है जो आपराधिक कार्यों के लिए जिम्मेदार होने के लिए बड़ी आयु के नहीं होते।
	पुनरीक्षित अनुवाद	किशोर न्याय दंड विधि का ऐसा क्षेत्र है जो ऐसे किशोरों पर लागू होता है जिनकी अवस्था (आयु) इतनी नहीं होती कि उन्हें आपराधिक कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सके।
2	**मूल पाठ**	An early compliance of the above will be appreciated.
	किया गया अनुवाद	उपर्युक्त के शीघ्र अनुपालन की प्रशंसा की जाएगी।
	पुनरीक्षित अनुवाद	उपर्युक्त विषय पर शीघ्र कार्रवाई करने पर हम आपके आभारी होंगे।

दिए गए पहले उदाहरण में 'व्यक्तियों' शब्द का प्रयोग करने से किशोरावस्था शब्द छूट गया है। अतः किशोर न्याय की भावना द्योतित नहीं होती जबकि प्रस्तावित अनुवाद में व्यक्तियों के स्थान पर किशारों और आयु के स्थान पर अवस्था शब्दों का प्रयोग करने से किशोर न्याय के सिद्धांत का औचित्य सिद्ध हो जाता है। इसी प्रकार criminal law पारिभाषिक शब्द है जिसके लिए पर्याय दंड विधि है, न कि आपराधिक विधि। इसी प्रकार कोश देखे बिना अनुवादक ने अपने अल्प ज्ञान के आधार पर appreciation शब्द के लिए प्रशंसा शब्दों का प्रयोग किया है। यहाँ पुनरीक्षक मूल शब्द को सही परिप्रेक्ष्य में शुद्ध करेगा।

3	**मूल पाठ**	Member of the service is expected to study as many as foreign languages as he may be able to do without check to his other service.
	किया गया अनुवाद	सरकारी कर्मचारी से अपेक्षा की जाती है कि वह अनेक विदेशी भाषाओं का अध्ययन करें क्योंकि वह अपने अन्य कार्यों का नुकसान किए बिना ऐसा कर सकता है।

	पुनरीक्षित अनुवाद	इस सेवा के कर्मचारी (सदस्य) से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अधिक से अधिक विदेशी भाषाएँ सीखे लेकिन इस बात का भी ध्यान रखे कि इससे उसके अन्य कार्यों पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े।

उपर्युक्त उदाहरण से अनुवादक ने स्रोतभाषा के as many as....as he may के पाठ का सही विश्लेषण न कर अर्थ में त्रुटि कर दी। अपने अन्य कार्यों का नुकसान किए बिना से उसके व्यक्तिगत कार्य का बोध होता है जबकि प्रस्तावित अनुवाद में उसके अन्य कार्यों से उसे सौंपे गए कार्यालयी कार्यों का बोध होता है।

4	**मूल पाठ**	Prem Chand is the greatest name in modern Indian Literature, and next to Rabindranath Tagore, the only one known outside Hindi. He pushed modern Hindi and Urdu fiction from the medieval age of the present times.
	किया गया अनुवाद	आधुनिक भारतीय साहित्य में प्रेमचंद का नाम सबसे अधिक जाना जाता है उनके बाद रविंद्रनाथ टैगोर ही एकमात्र साहित्यकार है जिन्हें भारत से बाहर भी जाना जाता है। प्रेमचंद ने आधुनिक हिंदी और उर्दू कथा साहित्य को मध्यकालीन युग से निकालकर वर्तमान काल से संबद्ध किया।
	पुनरीक्षित अनुवाद	प्रेमचंद आधुनिक भरतीय साहित्य की महान विभूति हैं और रवींद्रनाथ टैगोर के बाद वे एकमात्र ऐसे साहित्यकार है जिनकी ख्याति हिंदी साहित्य से बाहर में भी है। प्रेमचंद ने आधुनिक हिंदी और उर्दू कथा साहित्य को मध्यकालीन युग से निकालकर आधुनिक रूप में प्रतिस्थापित किया।

इस उदाहरण में अनुवादक ने अनुवाद में टैगोर का नाम प्रेमचंद के बाद कर दिया है जिसे पढ़कर मूलपाठ का सही बोध न होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

5	**मूल पाठ**	At the time of making these statements by the Hon. Minister the Secretary has to remain present in the official Gallery, Lok Sabha to assist, if necessary, the Minister, as also to attend to any exigencies that may arise in relation to these statements.
	किया गया अनुवाद	श्रीमान मंत्री महोदय द्वारा यह वक्तव्य देने के समय सचिव को सरकारी दीर्घा, लोकसभा में सहायता के लिए उपस्थित रहना होता है। मंत्री भी ऐसी आकस्मिकता में सहायता करते हैं, जो वक्तव्य के संबंध में हो सकती है।
	पुनरीक्षित अनुवाद	माननीय मंत्री महोदय द्वारा वक्तव्य दिए जाने के समय सचिव को लोकसभा की सरकारी दीर्घा में रहना चाहिए ताकि वे आवश्यकता पड़ने पर माननीय मंत्री महोदय को सहयोग दे सकें और उनके वक्तव्य से उत्पन्न किसी आकस्मिक स्थिति का समाधान कर सकें।

6	**मूल पाठ**	At any time before the item included in the list of Business is taken up by the House, the Govt. can withdraw that item.
	किया गया अनुवाद	किसी भी समय सदन द्वारा किसी मद को कार्यों की सूची में शामिल करने से पहले लिए जाने पर सरकार इस मद को वापस ले सकती है।
	पुनरीक्षित अनुवाद	सदन द्वारा किसी मद को कार्यों की सूची में शामिल किए जाने से पहले सरकार उस मद को कभी भी वापस ले सकती है।

उपर्युक्त वाक्य में At any time before पदबंध का अर्थ देते समय पदक्रम सही नहीं है।

7	**मूल पाठ**	Manufacturers-contractors must satisfy themselves that the stores are in accordance with the terms of contract and fully conform to the required specification by carrying out a thorough pre-inspection of each lot before actually tendering the same for same for inspection to the Quality Assurance Officer nominated under the terms of the contract. A declaration by the contractor that a necessary pre-inspection has been carried out on the stores tendered, will be submitted along with the challan. The declaration will also indicate the methods followed in carrying out pre-inspection showing the features checked/tested and will have the test certificate attached with challan/declaration.
	किया गया अनुवाद	उत्पादक एवं ठेकेदार को स्वयं अपने आप को ठेके की शर्तों और आवश्यक विनिर्देशों के अनुसार यह संतुष्ट कर लेना चाहिए कि खेप/भंडार ठेके की शर्तों के अनुरूप है। ठेके की शर्तों के अंतर्गत नामित गुणवत्ता आश्वासन अधिकारी के पास निरीक्षण के लिए भेजने से पहले प्रत्येक लॉट का पूर्ण रूप से गहन निरीक्षण कर लेना चाहिए। ठेकेदार चालान के साथ एक ऐसा घोषणा-पत्र भी जमा करेगा कि भेजे गए भंडार का आवश्यक पूर्व निरीक्षण कर लिया गया। जमा किए गए घोषणा-पत्रा में, पूर्व निरीक्षण करने में की गई जाँच/परीक्षण के तरीकों को भी द ाएगा और जाँच प्रमाण-पत्र को चालान/घोषणा के साथ संलग्न करेगा।
	पुनरीक्षित अनुवाद	विनिर्माता एवं संविदाकार को संविदा की शर्तों के अंतर्गत नामित गुणवत्ता आ वासन अधिकारी के पास निरीक्षण के लिए भेजने से पहले प्रत्येक लॉट का पूर्ण रूप से निरीक्षण कर लेना चाहिए और उसे यह संतुष्टि कर लेनी चाहिए कि सामान संविदा की शर्तों और अपेक्षित विनिर्देशों के अनुरूप है। संविदाकार चालान के साथ एक ऐसा घोषणा-पत्र भी प्रस्तुत करेगा कि उसने सामान का आवश्यक पूर्व निरीक्षण कर लिया है। वह घोषणा-पत्र में, पूर्व-निरीक्षण करने में अपनाई गई परीक्षण पद्धतियों को भी दर्शाएगा और चालान/घोषणा-पत्र के साथ परीक्षण प्रमाण-पत्र भी संलग्न करेगा।

इस अनुवाद में अनुवादक ने कार्य-कारण भाव को नहीं समझा है। विनिर्माता को निरीक्षण करने के बाद ही पता चलेगा कि समान संविदा की शर्तों और विनिर्देशों के अनुरूप है। परंतु अनुवाद में क्रम बदल दिया गया है। विनिर्माता पहले संतुष्टि कर लेगा फिर निरीक्षण। ऐसे अनुवादों को पुनरीक्षक सही रूप में प्रस्तुति कर सकता है। नीचे कुछ वाक्यों के अनुवाद और पुनरीक्षित अनुवाद नमूने के तौर पर दिए गए हैं। अब आप को अनुवाद और पुनरीक्षित अनुवाद में तुलना करके स्वयं देखना होगा कि अनुवाद के स्तर पर क्या और किस प्रकार की गलतियाँ हुई थीं और पुनरीक्षण करते समय उनमें क्या और किस प्रकार के संशोधन किए गए हैं।

क्र.सं.	मूल	अनुवाद	पुनरीक्षित अनुवाद
1	The Centre CRRID benefited immensely from his advice and guidance as the first chairman of its Board of Governors.	केंद्र अपने शासक मंडल के प्रथम अध्यक्ष के रूप में उनकी सलाह तथा दिशानिर्देशों से अत्यधिक लाभान्वित हुआ है।	शासक मंडल के प्रथम अध्यक्ष के रूप में उनका परामर्श एवं मार्गदर्शन इस केंद्र के लिए काफी उपयोगी रहा है।
2	Microscopy opened up a whole world of **fine** structure.	सूक्ष्मदर्शी ने **अति सुंदर** संरचना के नए युग को खोला।	सूक्ष्मदर्शी से पूरी **सूक्ष्म** जैविक संरचना को देखना संभव हो गया है।
3	What are credit facilities available in your Bank?	आपके बैंक में रकम/धन जमा कराने की क्या-क्या सुविधाएँ उपलब्ध हैं?	आपके बैंक में कौन-कौन सी ऋण सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

4	The Plant has been reported from Punjab.	यह पौधा पंजाब से प्रतिवेदित है।	यह पौधा पंजाब में भी मिलता है।
5	Today's cultures have strong historical, religious & legal legacy that…	आज की संस्कृति के इतिहास, धर्म और कानूनी बपौती से पता चलता है कि	आज की संस्कृति में ऐसी ठोस ऐतिहासिक, धार्मिक और कानूनी परंपराएँ मिलती हैं जो..
6	I am proud of the good work being done by this Centre.	केंद्र द्वारा किए जा रहे अच्छे कार्य पर मुझे गर्व है।	मुझे इस बात का गर्व है कि यह केंद्र बहुत अच्छा काम कर रहा है।
7	Work hard, play by the rules and never quit.	परिश्रमी बने, नियमों का पालन करें और जिम्मेदारी से न बचें।	कड़ी मेहनत, अनुशासन और पक्का इरादा।
8	To equip the operating staff with the skill and knowledge of the scheme, corporation Bank brought out this manual.	प्रचालनात्मक स्टाफ को योजना के प्रचालन के कौशल एवं ज्ञान से सुसज्जित करने के लिए कार्पोरेशन बैंक ने इस मैनुअल का प्रकाशन किया है।	कार्पोरेशन बैंक ने अपने प्रचालन स्टाफ को इस योजना के प्रचालन कौशल एवं ज्ञान की जानकारी देने के लिए यह मैनुअल प्रकाशित किया है।
9	I commend the efforts of I.T.D. for developing the scheme and of O&M Division for planning and designing the manual in a well structured and lucid manner.	मैं योजना का विकास करने के लिए I.T.D. के प्रयासों तथा एक सुसंरचित एवं बेहतरीन तरीके के मैनुअल का आयोजन एवं अभिकल्प करने में संगठन एवं पद्धति प्रभाग के प्रयासों की प्रशंसा करता हूँ।	मैं इस योजना को तैयार करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के प्रयासों की तथा सुव्यवस्थित एवं सुबोध तरीके से मैनुअल की रूपरेखा तैयार करने और प्रस्तुत करने के लिए संगठन एवं पद्धति प्रभाग के प्रयासों की प्रशंसा करता हूँ।
10	This is an easier and more convenient way of propagating grapevines.	यह अंगूर की बेलों का प्रचार करने की अपेक्षाकृत आसान और सुविधाजनक विधि है।	यह अंगूर की बेलों के प्रवर्धन की अपेक्षाकृत सरल और सुविधाजनक विधि है।
11	Supervisor shall not knowingly permit a man who is under influence of intoxicants to work.	पर्यवेक्षक जानबूझकर किसी भी व्यक्ति को जो मादक पदार्थ के प्रभाव में है कार्य करने की अनुमति नहीं देगा।	यदि पर्यवेक्षक यह जानता हो कि कोई व्यक्ति नशे में हैं तो वह उसे कार्य करने की अनुमति नहीं देगा।
12	Safety Belts in service shall not be load tested.	सेवा में सुरक्षा बेल्टों का भार परीक्षण नहीं किया जाएगा।	प्रयोग की जा रही सुरक्षा बेल्टों का भार परीक्षण नहीं किया जाएगा।
13	As the domestic containers are not moving to sea area.	क्यों घरेलू कंटेनर समुद्री क्षेत्र में नहीं जाते।	क्योंकि देशी कंटेनर समुद्री क्षेत्र में नहीं ले जाए जाते।
14	Good governance gives rise to an informed, participative and responsible society with shared values, norms, standards and aspirations.	यह साझा मूल्यों, मानदंडों और आकांक्षाओं सहित एक जानकार, सहभागी तथा उत्तरदायी समाज का निर्माण करता है।	यह एक ऐसे सूचना संपन्न, सहभागी तथा उत्तरदायी समाज का निर्माण करता है जिसके मूल्य, मानदंड और आकांक्षाएँ साझा हैं।
15	Even a minor irregularity may conceal a potential fraud.	छोटी अनियमितता से भी प्रमुख धोखा-धड़ी छिप सकती है।	जरा सी लापरवाही से गंभीर धोखा-धड़ी नजर से चूक सकती है।

इन उदाहरणों से आपको तुलना करने पर यह स्पष्ट हो गया होगा कि अनुवाद में कहीं तो विषय अथवा संकल्पना स्पष्ट न होने के कारण त्रुटि हुई है और कहीं अभिव्यक्ति करते समय। इस प्रकार पुनरीक्षण के स्तर पर अनुवादक

स्वयं या कोई अन्य व्यक्ति अनूदित सामग्री की जाँच करके उसके भाषागत दोषों को दूर करता है और विषयगत दृष्टि से अनूदित पाठ को प्रमाणित बनाने का प्रयास करता है।

अब तक आपको उपर्युक्त सैद्धांतिक चर्चा एवं व्यावहारिक उदाहरणों से पूर्णतया स्पष्ट हो गया होगा कि अनुवाद को उत्तम अनुवादक बनाने की प्रक्रिया में पुनरीक्षक की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है और पुनरीक्षण कितना श्रमसाध्य कार्य है। अब आप नीचे दिए गए उदाहरणों में मूलपाठ को भलीभाँति समझने के बाद प्रस्तुत अनुवाद से उसकी तुलना करेंगे और विषय एवं भाषा के स्तर पर हुई त्रुटियों को दूर करते हुए अनुवाद में संशोधन करने का स्वयं प्रयास करेंगे। किंतु इस स्तर पर आपको बहुत ही सावधानी और सजगता बरतनी होगी।

मूल (1)

Railway production units are striving to develop new products for the Indian Railways. AC 3-Tier coaches have been manufactured by RCF which would make AC travel cheaper and comfortable. Further, production of 5000 HP electric locomotives and fuel efficient diesel locomotive have also commenced at Chittaranjan Locomotive Works and Diesel Locomotive Works respectively. Diesel multiple units for suburban non-electrified routes and mainline electric multiple units for electrified sections have been manufactured by Integral Coach Factory, Chennai. Passengers originating has risen from 1,284 million in 1950-51 to 4,348 million in 1997-98 and passenger kilometer from 66.52 billion in 1950-51 to 357 billion in 1996-97. Despite constraint of resources, the railways have been able to cope with increasing demand of passenger traffic. Railways are the premier mode of passenger transport both for long distance and suburban traffic. During 1997-98, Indian Railways introduced 166 new trains, extended the run of 104 trains and increased the frequency of 22 trains in non-suburban sector. Similarly, in the suburban sector, railways introduced 94 new trains and extended the run of 58 trains.

Glossary

क. सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी पर्याय
1	Production units	उत्पादन युनिट
2	RCF	रेल कोच फैक्टरी
3	Non-electrified routes	अविद्युतीकृत मार्ग
4	Electrified sections	विद्युतीकृत खंड
5	Premier mode	मुख्य साधन
6	Suburban traffic	उपनगरीय यातायात
7	Extend	बढ़ाना
8	Frequency	आवृत्ति

अनुवाद

भारतीय रेलों हेतु उत्पादन इकाइयाँ नए उत्पाद विकसित करने का भरसक प्रयत्न कर रही हैं। रेल कोच फैक्टरी द्वारा वातानुकूलित 3-टियर सवारी डिब्बों का निर्माण किया गया है। इससे वातानुकूलित यात्रा सस्ती (कम खर्चीली) और आरामदेह हो जाएगी। क्रमशः चितरंजन रेल इंजन कारखाना तथा डीजल रेल इंजन कारखाना में 5000 अश्व शक्ति के विद्युत रेल इंजन तथा ईंधन किफायती इंजन डीजल रेल इंजन बनाने का कार्य भी शुरू किया जा चुका है। उपनगरीय विद्युत रहित मार्गों हेतु डीजल बहु इकाइयों तथा विद्युतीकृत खंडों हेतु मुख्य लाइन विद्युत बहु एककों को इंटीग्रल कोच फैक्ट्री ने निर्मित किया है। 1950-51 में रेल यात्रियों की संख्या 1,2840 लाख थी जो 1997-98 में बढ़कर 43480 लाख तथा 1950-51 में पैसेंजर कि.मी. 66.52 बिलियन था जो 1996-97 बिलियन हो गया। संसाधनों की कमी के बावजूद भारतीय रेल यात्री यातायात की बढ़ती हुई माँग को पूरा करने में समर्थ रही

है। भारतीय रेलवे ही लंबी दूरी तथा उपनगरीय यात्री परिवहन का मुख्य साधन है। 1997-98 के दौरान गैर उपनगरीय क्षेत्र में भारतीय रेल ने 166 नई गाड़ियाँ 104 रेल गाडियों की दूरी बढ़ाई तथा 22 रेल गाड़ियों की आवृत्ति बढ़ाईं इसी प्रकार उपनगरीय क्षेत्र में रेलवे ने 94 नई रेल गाडियाँ चलाई और 58 रेलगाड़ियों की दूरी बढ़ा दी।

मूल (2)

The Passenger Carrying Vehicle (PCV) fleet has not grown commensurate with traffic demand due to financial constraints and limited capacity to manufacture them. A new coach factory at Kapurthala was set up to meet the additional requirement of demand of coaches. Efforts also have been made to absorb growing traffic demands by improving the design of the existing stock. Coaches with better layout and more seating capacity are being manufactured now. 2-tier and 3-tier A.C. Coaches have replaced First Class coaches of lower capacity in most trains. In order to improve capacity and to provide more comfort to passengers, 24 state-of-the-art coaches, having speed potential of 160 kmph, are being procured from Mès ALSTOM, Germany with arrangement for 'Transfer of Technology" to enable manufacture of new design coaches at RCF and ICF.

Glossary

क. सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी पर्याय
1	Passenger Carrying Vehicle (PCV)	सवारी डिब्बे
2	Commensurate with	के अनुरूप
3	Replace	प्रतिस्थापित
4	State-of-art	अत्याधुनिक
5	Transfer of Technology	प्रौद्योगिकी अंतरण

अनुवाद

भारतीय रेलों के सवारी डिब्बों के बेड़े में वित्तीय तंगियों और सवारी डिब्बों के निर्माण की सीमित क्षमता की वजह से यातायात की बढ़ती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप वृद्धि नहीं हुई है। सवारी डिब्बों की अतिरिक्त आवश्यकता/माँग को पूरा करने के लिए कपूरथला में एक नया सवारी डिब्बा कारखाना स्थापित किया गया था। इस बीच भारतीय रेलों ने मौजूदा स्टॉफ के डिजाइन में आ ोधन करके बढ़ती हुई यातायात की माँग को पूरा करने के प्रयास भी किए हैं। उन्नत अभिकल्प तथा बैठने के स्थान की अधिक क्षमता वाले नए सवारी डिब्बों का निर्माण किया जा रहा है। अधिकांश गाड़ियों में कम क्षमता वाले पहले दर्जे के सवारी डिब्बों के स्थान पर 2-टियर और 3-टियर वातानुकूल सवारी डिब्बे लगाए गए हैं। क्षमता में वृद्धि करने तथा यात्रियों को और अधिक सुविधा मुहैया कराने के उद्देश्य से मैसर्स एल्सटॉम, जर्मनी से 160 कि.मी. प्रतिघंटा की गति की क्षमता से चलने वाले 24 अत्याधुनिक सवारी डिब्बे 'प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण' की व्यवस्था सहित खरीद जा रहे हैं ताकि रेल कोच फैक्टरी तथा सवारी डिब्बा कारखाना में इन नए अभिकल्प के सवारी डिब्बों का विनिर्माण किया जा सके।

मूल (3)

Initially, Railway's telecom requirements were met through DOT. However, in order to ensure efficient performance of their telecom circuit, Railways have, over the years, developed their own dedicated telecommunication networks and are gradually reducing their dependence on DOT. As a step towords moderniztion and improvement in the reliability and efficiency of telecom services, Digital Electronic Exchages, Digital Microwave System, Optical Fibre Communication (OFC) System and Mobile Train Radio Communication Systems are being progressively inducted on IR. During the year, a total of 10,580 lines were connected to Digital Electronic Exchanges as replacement and expansion of the exiting Strowger Type Exchanges, bringing the total electronic lines ot 167,426, constituting about 96% of the total installed capacity of 176,904 lines on IR. Total 333 Route kms.

Of high-capacity digital microwave links were added and 1,007 Route kms. Of OFC installed for improving the efficiency of control circuits. For improving passenger amenities, microprocessor-based Public Address System at 15 stations and Electronic Train indication Boards at 6 stations were provided during the period. Interctive Voice Response system (IVRS) for giving information about train arrival and departure and status of availability of reservation on train been installed at 92 stations during the year.

Glossary

क्र. सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी पर्याय
1	DOT	दूरसंचार विभाग
2	Reliability	विश्वसनीयता
3	Efficiency	दक्षता
4	IR	भारतीय रेलवे
5	Passengers amenities	यात्रियों की सुविधाओं

अनुवाद

आरंभ में रेलवे में दूरसंचार आवश्यकताओं को दूरसंचार विभाग द्वारा पूरा किया जाता था। बहरहाल इन वर्षों में रेलवे ने अपने दूरसंचार सर्किटों को दक्ष बनाने के लिए दूरसंचार नेटवर्क बनाने का विकास किया है और धीरे-धीरे दूरसंचार विभाग पर निर्भरता समाप्त कर रहा है। दूरसंचार सेवाओं में दक्षता और सुधार लाने के लिए आधुनिकीकरण और विकास में भारतीय रेलवे ने डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक एक्सचेंज, डिजिटल माइक्रोवेव प्रणाली, ऑप्टिकल फाइबर कम्यूनिकेशन प्रणाली तथा मोबाइल ट्रेन, रेडियो कम्यूनिकेशन आदि धीरे-धीरे शुरू किए जा रहे हैं। इस वर्ष के दौरान 10,580 लाइनों को डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक एक्सचेंज के साथ जोड़ा गया। कुल 1,67,426 इलेक्ट्रॉनिक लाइनें बनाई गईं जो भारतीय रेलवे की 1,76,904 लाइनों का 95: है। नियंत्रण सर्किट की दक्षता को जोड़ने के लिए उच्च क्षमता के 333 मार्ग किलोमीटर डिजिटल माइक्रोवेव संपर्क जोड़ा गया और 1007 मार्ग किलोमीटर ओ.एफ.सी. लगाए गए। इस अवधि के दौरान यात्रियों की सुविधाओं को बढ़ाने के लिए 15 स्टेशनों पर माइक्रो प्रोसेस आधारित जन संबोधन प्रणाली तथा 6 स्टेशनों पर इलेक्ट्रॉनिक ट्रेन सांकेतिक बोर्ड लगाए गए। इस वर्ष के दौरान 92 स्टे ानों पर गाड़ियों के आवागमन/प्रस्थान तथा आरक्षण स्थिति की उपलब्धता की जानकारी हेतु आई.आर.वी.एस. प्रणाली लगाई गईं

मूल (4)

Over the years, engineering industries in the country have registered a phenomenal growth to generate a strong base in a wide-range of heavy and light engineering industries covering a broad spectrum of capital goods and consumer durable products. Bulk of capital goods required for power projects, fertilizer plants, cement plants, steel plants, mining equipment and petrochemical plants are being met from indigenous production. Construction machinery and equipment for irrigation projects, diesel engines, pumps and tractors for agriculture, vehicles etc., transport are also being met from within the country. Engineering industries have also demonstrated their capacity to manufacture large size plants and equipments for various sectors such as power generation, fertilizers and cement.

Major manufacturers of machine tools have now developed CNC machine tools such as machining centres, turning centres etc. The machine tool industry has also commenced production of high productive machine such as industrial robots, flexible manufacturing system, etc. Indigenous industry in not only exporting general purpose machine to advanced countries but have also commenced export of CNC machine tools. Overall production of machine tools has increased from just under Rs. One crore in 1950-51 to Rs. 752.80 crore in 1997-98.

Glossary

क्र. सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी पर्याय
1	Phenomenal	अद्‌भुत/विलक्षण/असाधारण
2	Power projects	विद्युत परियोजनाएँ
3	Fertilizer plants	उर्वरक संयंत्र
4	Cement plants	सीमेंट कारखाने
5	Steel plants	इस्पात संयंत्र
6	Mining equipment	खनन उपस्कर
7	Petrochemical plants	पेट्रो रसायन संयंत्र
8	Indigenous industry	स्वदेशी उद्योग
9	Turning centres	खराद केंद्र
10	Flexible manufacturing	लचीली उत्पादन प्रणाली

अनुवाद

पिछले वर्षों के दौरान इंजीनियरी उद्योग ने शानदार प्रगति की है और भारी तथा हल्के इंजीनियरी उद्योगों के क्षेत्र में अपना आधार सुदृढ़ कर लिया है। इस उद्योग के अंतर्गत पूँजीगत साज-सामान और टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं समेत कई तरह का सामान बनाने वाले कारखाने शामिल हैं। पूँजीगत साज-सामान का निर्माण करने वाले उद्योग जो वस्तुएँ बनाते हैं, उनका उपयोग बिजली परियोजनाओं, उर्वरक संयत्रों, सीमेंट कारखानों, इस्पात संयंत्रों, खनन उपकरणों तथा पेट्रो रसायन संयत्रों आदि में किया जाता है। इन उद्योगों के लिए आवश्यक भारी मशीनों और उपकरणों का उत्पादन अब देश में ही होने लगा है। इसके अलावा सिंचाई परियोजनाओं के निर्माण में काम आने वाली मशीनों और उपकरणों, डीजल इंजनों, कृषि के लिए पंप सेटों और ट्रैक्टरों, वाहनों तथा परिवहन उपकरणों का भी देश में ही उत्पादन होने लगा है। इंजीनियरी उद्योग ने विद्युत उत्पाद, उर्वरक और सीमेंट उत्पादन जैसे विभिन्न क्षेत्रें के लिए विशाल आकार के संयंत्रों और उपकरणों के उत्पादन की अपनी क्षमता का भी परिचय दिया है।

मशीनों और उपकरणों के अधिकतर उत्पादकों ने मशीनिंग सेंटर, मिलिंग सेंटर और टर्निंग सेंटर जैसे महत्वपूर्ण यंत्रों तथा उपकरणों का विकास कर लिया है। इस उद्योग ने औद्योगिक रोबोट और लचीली उत्पादन प्रणालियों के क्षेत्र में उच्च उत्पादकता वाली मशीनों का उत्पादन शुरू कर दिया है। भारत का यंत्र और उपकरण उद्योग न सिर्फ सामान्य उपयोग की मशीनों का दुनिया के विकसित देशों को निर्यात कर रहा है, बल्कि इसने सी.एन.सी. मशीनों और उपकरणों का निर्यात भी प्रारंभ कर दिया है। देश में मशीनों और उपकरणों का निर्यात भी प्रारंभ कर दिया है। देश में मशीनों और उपकरणों का उत्पादन 1950-51 में एक करोड़ रुपए से भी कम का होता था, जो 1997-98 में बढ़कर 752.80 करोड़ रुपए हो गया।

4.11 सारांश

आपने इस इकाई में जाना कि अनुवाद पुनरीक्षण में अनुवाद की जाँच, सुधार, तथा उसकी भाषा-शैलीगत पर्याप्तता आदि पर गौर किया जाता है। इससे जहाँ सामान्य भूलों का सुधार हो जाता है वहीं अनावश्यक विस्तार या अंतराल को भी रोका या पूरा किया जा सकता है। पुनरीक्षक एक अच्छा पाठक, भाषाविद् तथा समाज-संस्कृति के प्रति संवेदी कुषल अनुवादक होता है जो तटस्थ भाव से मूल तथ लक्ष्यपाठ के मध्य 'तादात्म्य' बिठाने का श्रम करता है। पुनरीक्षक अनुवादक की अपेक्षा अधिक सजग एवं पाठकीय दृष्टि संपन्न व्यक्ति होता है जो इस 'अन्यीकृत' पाठ की लक्ष्य वर्ग में स्वीकार्यता में पक्ष पर अपना ध्यान केंद्रित करता है।

इस पाठ में वर्णित सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त करने और प्रस्तुत अनुवाद का सावधानी एवं सजगतापूर्वक संशोधन करने के बाद आप यह भी महसूस कर करेंगे कि आप एक अच्छे अनुवादक तो बन ही गए हैं साथ ही एक अच्छे पुनरीक्षक के गुणों से परिचित हुए हैं। अनुवादक के नाते आप अनुवाद करते समय जो त्रुटियाँ करते रहे हैं, उन्हें पुनरीक्षण के स्तर पर दूर करने में आप सक्षम बन जाएंगे। पाठ्य साम्रगी में प्रदत्त अभ्यासों के दौरान आपने यह भी संज्ञान लिया होगा कि अनुवादक को स्रोत और लक्ष्यभाषा की संरचनात्मक जानकारी, पारिभाषिक शब्दावली एवं लोक प्रचलित शब्द-अर्थ का ज्ञान आवश्यक होता है। पुनरीक्षक की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है यह भी आपने इस इकाई में विस्तार से जाना।

4.12 अभ्यास एवं बोध प्रश्न

1. पुनरीक्षण का क्या अर्थ है तथा पुनरीक्षण क्यों आवश्यक है?
2. अनुवाद पुनरीक्षण और अनुवाद मूल्यांकन में अंतर स्पष्ट कीजिए?
3. पुनरीक्षण किन-किन स्तरों पर किया जाता है?
4. पुनरीक्षण करते समय किस प्रकार के संशोधन किए जाते हैं?
5. पुनरीक्षण में किन गुणों का होना अपेक्षित है?
6. पुनरीक्षण के लिए कुछ व्यावहारिक सूत्रों का परिचय दीजिए।
7. पुनरीक्षण के दौरान आपको किस प्रकार की समस्याएँ आईं?
8. पुनरीक्षण के दौरान प्राप्त अनुभवों को संक्षेप में लिखिए।

4.13 शब्दावली

पुनरीक्षण, समीक्षा, मूल्यांकन, भाषायी, संकल्पनात्मक (विशेष शब्दावली इकाई में दिए गए नमूना पुनरीक्षण अभ्यास में दी गई है)।

4.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- कृष्ण कुमार गोस्वामी, 2008, 2012, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- कैलाशचन्द्र भाटिया, *अनुवाद कला : सिद्धांत और अनुप्रयोग,* नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन
- दिलीप सिंह, साहित्येतर पाठ का संदर्भ, *अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन*।
- दिलीप सिंह, 2013, अनुवाद की व्यापक संकल्पना, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।